

ॐ सत्

(तोटक छंद)

यमनियम संजम आप कियो, पुनि त्याग बिराग अथाग लह्यो;
वनवास लियो मुभ मौन रह्यो, दंड आसन पद्म लगाय दियो. १
मन पौन निरोध स्वबोध कियो, हठजोग प्रयोग सु तार लयो;
जप भेद जपे तप त्योंहिं तपे, उरसेंहि उदासी लही सबपें. २
सब शास्त्रनके नय धारि हिये, मत मंडन भंडन भेद लिये;
वह साधन बार अनंत कियो, तदपि कुछ हाथ हजु न पर्यो. ३
अब क्यों न बियारत है मनसें, कुछ और रहा उन साधनसें ?
बिन सद्गुरु कोय न भेद लहे, मुभ आगल हैं कह बात कहे ? ४
करुना हम पावत है तुमकी, वह बात रही सुगुरु गमकी;
पलमें प्रगटे मुभ आगलसें, जब सद्गुरुचरन सुप्रेम बसें. ५
तनसें, मनसें, धनसें, सबसें, गुरुदेवकी आन स्व-आत्म बसें;
तब कारज सिद्ध बने अपनो, रस अमृत पावहि प्रेम धनो. ६
वह सत्य सुधा दरशावहिंगे, यतुरांगुल है गगसे मिलहे;
रस देव निरंजन को पिवही, गहि जोग जुगोजुग सो जुवही. ७
पर प्रेम प्रवाह बढे प्रभुसें, सब आगमभेद सुउर बसें;
वह केवलको बीज ग्यानि कहे, निजको अनुभौ बतलाए दिये. ८